अंजुरी भर ग़ज़लें

सं.: अशोक अंजुम

अंजुरी भर ग़ज़लें

(चर्चित ग़ज़लकारों की हिन्दी
ग़ज़लों का महत्त्वपूर्ण संकलन)

समर्पण—

डॉ० शेरजंग गर्ग
डॉ० कुंअर बेचैन
डॉ० उर्मिलेश
शिव ओम अम्बर
ज्ञानप्रकाश विवेक
विजय किशोर मानव
एवं
माहेश्वर तिवारी
को—

अंजुरी भर ग़ज़लें

सम्पादन :

अशोक अंजुम

अयन प्रकाशन, नई दिल्ली

अयन प्रकाशन

1/20 महरौली, नई दिल्ली-110030

फोन : 650604

बिक्री कार्यालय :

1619/6बी, उल्धनपुर, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण : शान्ति स्वरूप

मूल्य : पैंतीस रुपये

प्रथम संस्करण 1992 © संकलित ग़ज़लकार

ANJURI BHAR GAZALEN (Hindi Ghazals)

Ed. by Ashok Anjum

मुद्रक : ए० पी० प्रिंटर्स, रामनगर, शाहदरा, दिल्ली-32

अपनी बात

'ग़ज़ल' उर्दू साहित्य के तो सदैव केन्द्र में रही ही है किन्तु बीसवीं सदी में यह हिन्दी साहित्य की भी सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य-धारा के रूप में उभरकर आई है। ग़ज़ल को जनमानस तक पहुंचाने में स्व० दुष्यन्त कुमार की स्तुत्य भूमिका रही है। हिन्दी ग़ज़ल के लिए दुष्यन्त कुमार का नाम मील का पत्थर साबित हुआ। 'ग़ज़ल' के शाब्दिक अर्थ पर जाएं तो निष्कर्ष निकल कर आता है कि इसकी आत्मा 'शृंगार' है किन्तु आज ग़ज़ल दुनिया-जहान के सभी विषयों को अपने अन्दर समेट रही है; और हिन्दी के क्षेत्र में यही इसकी लोकप्रियता का कारण भी है। आज हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में अनेक ग़ज़लकार स्व० दुष्यन्त कुमार से भी अच्छी ग़ज़लें कह रहे हैं लेकिन आलोचकों की कलम दुष्यन्त कुमार के नाम पर आकर अटकी हुई है। आलोचकों को समकालीन सशक्त ग़ज़लकारों का स्वस्थ मानसिकता के साथ मूल्यांकन करना अनिवार्य है, इसके लिए पूर्वाग्रहों को तोड़ना होगा।

आज ग़ज़लकारों का एक बड़ा-सा जखीरा हिन्दी-उर्दू साहित्य में दिखाई पड़ता है। हर नया कवि, प्रायः देखा है कि अपने लेखन की शुरुआत ग़ज़ल से ही करता है—जबकि ग़ज़ल अत्यधिक संवेदनशील विधा है। इसके कथ्य और शिल्प की बारीकियों को जाने बगैर 'ग़ज़ल' के साथ छेड़छाड़ करना—किसी अपरिचित के घर में बिना दरवाज़ा खटखटाए अन्दर घुस जाने जैसा है। इस मनोवृत्ति से बचना होगा—पहले परिचय प्राप्त करें—तभी आगे कदम बढ़ायें।

प्रस्तुतः संकलन में आठ सशक्त हस्ताक्षर आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। सम्भव है आपको कुछ नाम नए भी जान पड़ें किन्तु उनकी ग़ज़लों से साक्षात्कार कर आप सोच की नई ज़मीन से जुड़ेंगे—ऐसा मेरा विश्वास है।

सम्मिलित ग़ज़लकारों के प्रति आभार व्यक्त करके इनके स्नेह से उऋण नहीं हो पाऊंगा—और न होने की चाह ही है। प्रकाशक महोदय के विशेष श्रम व सहयोग से यह पुस्तक इतने सुन्दर कलेवर में आपके समक्ष प्रस्तुत हुई है। आभार की औपचारिकता इनके श्रम व सहयोग को भी हल्काएगी ही।

पुस्तक पर आपके विचार व भविष्य के लिए सुझाव पाकर मुझे लगेगा जैसे लक्ष्मण को संजीवनी मिल गई।

प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में

सदैव—

—अशोक अंजुम

एफ-23, नई कालोनी
कासिमपुर (पा० हा०)
अलीगढ़—202127
(उ० प्र०)

अनुक्रम

1. हस्तीमल 'हस्ती'	9
2. शंकर प्रसाद करगेती	19
3. के० के० सिंह 'मयंक'	29
4. सैय्यद मुहम्मद असलम	39
5. सुनील त्रिवेदी 'जोगी'	49
6. अश्विनी कुमार पाण्डेय	59
7· कमलेश भट्ट 'कमल'	69
8· अशोक 'अंजुम'	79

के० के० सिंह 'मयंक'
(मयंक अकबराबादी)

जन्म-तिथि : 4 सितम्बर, 1944

पिता का नाम : श्री ईश्वरी प्रसाद

प्रकाशन : (i) कुछ गीत अनाम के नाम (ii) जज़्ब-ए-इश्क़ (iii) मयंक की ग़ज़लें (iv) मयंक की शायरी (v) जुनून (vi) सिम्तेकाशी से चला (vii) नज़राना-ए-अक़ीदत आदि-आदि व विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में ।

: रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद ।

: दूरदर्शन, आकाशवाणी, कैसेट्स और रिकार्डस द्वारा रचनाएं प्रसारित ।

: दूरदर्शन सीरियल तथा फिल्मों के लिए गीत लेखन ।

: अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों व मुशायरों में रचना पाठ ।

सम्प्रति : सेन्ट्रल रेलवे बम्बई के रेलवे क्लेम्स ट्रिब्यूनल में प्रेजेन्टिंग अफ़सर

सम्पर्क :

E-63, बधवार पार्क, कुलाबा, बम्बई-400005

वक्त बदला

थी हवाएं तुंद कितनी मुझको अंदाज़ा न था
क्यूं कि जिस कमरे में था मैं उसमें दरवाज़ा न था

ख़ून दामन पर न था गो दर्द था बे इन्तिहा
क्यूं कि दिल का ज़ख़्म गहरा था मगर ताज़ा न था

वक़्त बदला तो सभी साथी बिछुड़कर रह गये
साथ तुम भी छोड़ दोगे इसका अंदाज़ा न था

किसमें हिम्मत थी जो मेरे हौसलों को तोड़ता
ये बिखर जाता ग़मों से ऐसा शीराज़ा न था

हर कोई बनता है ग़ालिब, मीर, मोमिन और जिगर
जब सुना हमने तो कोई शेर भी ताज़ा न था

दौरे-हाज़िर की ये दुल्हन किस तरह लगती हसीं
जब कि चेहरे पर हया और शर्म का गाज़ा न था

वो वफ़ाओं का ज़फ़ाओं से सिला देते रहे,
क्या 'मयंक' इश्क़ और उल्फ़त का ये खामियाज़ा न था

उसने कहा—'नहीं नहीं'

मैंने कहा—'हो जलवागर', उसने कहा—'नहीं, नहीं'
मैंने कहा—'मिली नज़र', उसने कहा—'नहीं-नहीं'

मैंने कहा—'ये शाम है', उसने कहा—'ये जाम है'
मैंने कहा—'तो जाम भर', उसने कहा—'नहीं, नहीं'

मैंने कहा—'कहां मिलें ?' उसने कहा—'जहां कहें'
मैंने कहा—'बाम पर', उसने कहा—'नहीं, नहीं'

मैंने कहा—'पयाम लो', उसने कहा—'सलाम लो'
मैंने कहा—'ज़रा ठहर', उसने कहा—'नहीं, नहीं'

मैंने कहा कि 'रुख़ इधर', उसने कहा—'हैं चश्मेतर'
मैंने कहा कि 'सब्र कर', उसने कहा, 'नहीं, नहीं'

मैंने कहा कि 'हो नज़र', उसने कहा—'कहां, किधर ?'
मैंने कहा—'मयंक' पर', उसने कहा—'नहीं, नहीं'

जागती आंखों से

यूं निगाहों ने तुम्हारे हुस्न का मंजर छुआ
उंगलियों ने गुल को जैसे फ़ासला रखकर छुआ

सर निगूं जब-जब भी चौखट पे तेरी हमने किया
ख़ुद-ब-ख़ुद झुककर बुलंदी ने हमारा सर छुआ

जागती आंखों से शब भर देखता कैसे मैं ख़्वाब
सुबहे-सादिक ही तो आकर नींद ने बिस्तर छुआ

तेज़तर नज़रों से नज़रें जब मिलीं तो यूं लगा
उन हसीं नाज़ुक निगाहों ने कोई ख़ंजर छुआ

भर उठा था ख़ुशबुओं से ये मेरा सहने-हयात
संदली चौखट लगा मैंने जो तेरा दर छुआ

वो शिवाले का मुजस्सम बन गया शंकर 'मयंक'
जब अक़ीदत से किसी इंसां ने वो पत्थर छुआ

बस इसी खातिर

क़र्ज़ क्या है भीख भी उसको गवारा है मियां
ख़्वाहिशों ने इस क़दर इंसां को मारा है मियां

दूर तक पानी ही पानी है मगर प्यासे हैं लोग
चार सू खारे समुंदर का नज़ारा है मियां

वो फ़क़त दो गज़ ज़मीं में क़ैद होकर रह गया
जो कहा करता था कि सब कुछ हमारा है मियां

वो वतन पर मिट गए और ये मिटा देंगे वतन
जानते हो किस तरफ मेरा इशारा है मियां

लालची मां-बाप से वो कब बग़ावत कर सका
बस इसी खातिर तो अब तक कंवारा है मियां

दूर कितनी भी हो मंजिल, मुझको जाना है 'मयंक
फिर किसी ने प्यार से मुझको पुकारा है मियां

बहुत पछताओगे

हरिक जुमले में थे कुछ लब्ज़ तू के
अजब अंदाज़ थे उस गुफ़्तगू के

मैं सीता चीथड़े खुद आबरू के
हुनर आते अगर दिल की रफू के

है मौका ईद का, तुम दीद कर लो
बहुत पछताओगे गर आज चूके

महक उट्ठे थे जिस्मो-जेहन मेरे
सबा आई जो उनकी जुल्फ़ छू के

मिरी आमद पै' यारों ने बिछाए
ग़लीचे ही ग़लीचे गोखरू के

उन्हें क़ातिल के दामन पै' भला क्यों
नज़र आते नहीं धब्बे लहू के

झुलस उट्ठी चिनारों की भी वादी
चले झोंके कुछ ऐसी गर्म लू के

'मयंक' उस साहिबे-दुनिया के दर पै'
चलो फैलाएं दामन आरज़ू के

बोलो, उत्तर दो !

किसने आग लगाई, बोलो, उत्तर दो !
बोलो मेरे भाई, बोलो, उत्तर दो !

मंदिर में भी अम्न नहीं, खूं बहता है
कौन है उत्तरदायी, बोलो, उत्तर दो !

जिसके पैर न फटे बिवाई, वो कैसे—
जाने पीर पराई, बोलो, उत्तर दो !

सच के हक़ में फ़ाक़े, झूठों के हक़ में—
क्यूं है दूध-मलाई, बोलो, उत्तर दो !

मुर्दे के संग ज़िंदा जिस्म जला डालो
किसने रीत बनाई, बोलो, उत्तर दो !

पाप के दरिया में नेकी कैसे डालूं—
बोलो हातिमताई, बोलो, उत्तर दो !

'मयंक' तुमने रात में कैसे सूरज से—
ये उजियारी पाई, बोलो, उत्तर दो !

तुम कभी सुनते नहीं

ये बहारें, ये नज़ारे किसलिए ?
तुम बिना ये चांद तारे किसलिए ?

जिसकी बातें तुम कभी सुनते नहीं
वो तुम्हें फिर भी पुकारे किसलिए ?

आड़ में अब धर्म और ईमान की
ये फसादात और नारे किसलिए ?

हो गया हो ग़र्क़ जो मंझधार में
उसकी क़िस्मत में किनारे किसलिए ?

इल्म और ताक़त हों जिसके आस-पास
ज़िन्दगी रोकर गुज़ारे किसलिए ?

अपनी ही उलझन न जो सुलझा सके
ग़ैर की ज़ुल्फें संवारे किसलिए ?

जब कोई रिश्ता नहीं हमसे तो फिर
पास आते हो हमारे किसलिए ?

ग़म मिटे, खुशियां मिली हों तो 'मयंक'
फिर भला अश्कों के धारे किसलिए ?

ग़लत क्या है

ग़लत क्या है यहां और ठीक क्या है
यही तो सबसे मुश्किल मोजज़ा है

मिरा क़ातिल ही मुझसे पूछता है—
'तुम्हारा कत्ल कब, कैसे हुआ है ?'

दरो-दीवार सारे ढह चुके हैं
मगर साया है वैसा ही खड़ा है !

महाभारत कहीं है ज़िन्दगी, तो
कहीं पर एक जंगे-कर्बला है

कहीं रुसवाई घर में घुस न आए
मेरी इज़्ज़त का दरवाज़ा खुला है

ये बूढ़े दीप गुल होने न देना
मुखालिफ अहदे-हाज़िर की हवा है

'मयंक' इल्जाम दें हम क्यूं जहां को
मकां गर कहीं दीपक से जला है
धरने

पूछा जो हश्र वक्त ने

दुनिया की इक फकीर ने कुछ यूं मिसाल दी—
मुट्ठी में भरके धूल हवा में उछाल दी

इक़रार मेरे प्यार का महफ़िल में करके दोस्त
दिल में जो एक फांस थी वो भी निकाल दी

डूबा भंवर में वो कि किनारे निगल गये
हमने तलाशे-यार में नदिया खंगाल दी

पूछा जो हश्र वक़्त ने कुछ यूं दिया जवाब
चुटकी में ख़ाक मेरे सर पै डाल दी

चाहा था बदलियों से दिखे ईद का हिलाल
तुमने नक़ाब उठा के वो हसरत निकाल दी

दुनिया ने अश्क, आह, अलम ही दिए 'मयंक'
सौग़ात मगर जो भी दी वो बेमिसाल दी